'विश्ववल्लभः' में द्रुमचित्रीकरण विज्ञान

हेमलता बोलिया

पण्डितचक्रपाणिमिश्रः महाराणाप्रतापसिंहस्य प्रार्थनामनु विश्ववल्लभ इति वैज्ञानिकरचनां व्यधात्। तत्र वास्तु, भूगर्भविज्ञानं, कृषिविज्ञानमिति विज्ञानस्य विविधशाखानां विवरणं दरीदृश्यते। बृहत्संहिता शार्ङ्गधरपद्धतिं चाधृत्य प्रवृत्तायां वैज्ञानिककृतौ अस्यां द्रुमचित्रीकरणं कथङ्कार-मस्तीति स्पष्टं विवृणोत्ययं प्रबन्धः। आधुनिकविज्ञानिनामपि विस्मयावहान् विज्ञानविषयान् प्रस्तुत्य चक्रपाणिविश्रस्य विज्ञानज्ञानं प्रकाशयति प्रबन्धी।

महाराणा प्रतापकालीन (सं. १६२८ से १६५३) पं. चक्रपाणि मिश्र की **'विश्ववल्लभः'** एक वैज्ञानिक कृति है, जिसमें कवि ने भूगर्भजलविज्ञान के साथ-साथ वास्तुविज्ञान, भूविज्ञान, वनस्पति/पादपविज्ञान, कृषिविज्ञान आदि विज्ञानों की विविध शाखाओं का सम्यक् निरूपण किया है। पण्डितजी ने महाराणा की आज्ञा से समसामयिक समस्याओं के समाधान के रूप में प्रस्तुत ग्रंथ का प्रणयन किया। जिसका आदर्श वराहमिहिर की *बृहत्संहिता* और शार्ङ्गधर की *शार्ङ्गधर-पद्धति* आदि ग्रन्थ रहे हैं। मिश्रजी ने इन्हीं ग्रन्थों से प्रेरणा लेकर स्वमौलिक प्रतिभा से कृषिकर्म सम्बन्धित छोटी से छोटी जानकारी का सूक्ष्म एवं व्यवहारोपयोगी वर्णन किया है। कृषि के अन्तर्गत कृषियोग्य भूमि का चयन सर्वप्रथम करणीय है। तदनन्तर उचित समय और ऋतु में पौधारोपण/बीजवपन रोपण/वपनविधि, तत्सम्बन्धी सामग्री, सेंचनविधि, द्रुमचिकित्सा आदि के साथ ही अधिक शीघ्र सर्वसमय (सर्वऋतु), स्वादिष्ट, सुगन्धित फल-पुष्प प्राप्ति के (विचित्रीकरण) उपायों एवं सामग्री का साङ्गोपांग निरूपण किया है। प्रस्तुत कृति में ९ (नव) उल्लास और ३५१ (तीन सौ इक्कावन) के लगभग श्लोक हैं। जिनमें से अन्तिम नवम उल्लास में चक्रपाणि मिश्र ने द्रुमचित्रीकरण ५१ (इक्कावन श्लोकों में विशद प्रतिपादन किया है।

ग्रन्थ में वर्णित द्रुमचित्रीकरण पर विचार करने से पूर्व 'चित्रीकरण' शब्द पर विचार करना समीचीन होगा। **वह विधि या उपाय जिसके द्वारा वृक्ष के फल-पुष्प** में विचित्रता उत्पन्न हो, जिसे देखकर जन सामान्य आश्चर्यचकित हो या सामान्य से **हटकर कुछ विलक्षण बोध उत्पन्न करे, उसे चित्रीकरण कहते हैं।** इस विधि या उपाय से कृषिकर्म करने वाले किसी वृक्ष या पुष्प की नवीन प्रजाति विकसित करते हैं, जिसके परिणामस्वरूप वृक्ष से अधिक फल-पुष्प की प्राप्ति के साथ ही उसकी किस्म उन्नत, स्वादिष्ट, आकार-प्रकार में बड़े तथा पुष्प सुगन्धित होते हैं। अतः द्रुमचित्रीकरण का कृषि विज्ञान में महत्वपूर्ण स्थान है।

द्रुमचित्रीकरण सामग्री–

द्रुम चित्रीकरण में विधि के साथ सामग्री का भी अपना महत्त्व है। कुछ सामग्री तो सहज सुलभ है और कुछ विशिष्ट। सामग्री प्रयोग के साथ संग्रह में स्वविवेक की विशेष आवश्यकता है। सम्बन्धित सामग्री का विवरण अधोलिखित है–गोबर, गायवत्सगोबर, बालूमिट्टी, खल-मल, भैंसमूत्र-भस्म, वनकक्षार, कौमुदी कन्द, कोमलफल की गुठली, करीष, शूकर-गुठली, नखाम्बु, तगा, उशीर (खस) की छाल, इलायचीनख की त्वक् अर्थात् इलायची डोडे की छाल, तत्काल मारे बकरे की खाल, एरण्डी/एरण्डीबीज, वराह-मछली-सूअर-मगर की वसा-मांस, वत्सवसा, खरगोश-कूर्म-नरकपोतरक्त, विडङ्ग-मुलेठी-महुआ-मूंग-जौ-तिल महुए के फूल कसीस-नील ताम्र-पचा-हल्दी-जटाओं के चूर्ण/आटा/पाउडर। कुणप-लवण-विङ्ग-जीवन्तिका के पत्ते-मनःशिला-मजीठा-देवदारु-हल्दी- जौ-कुष्ठ सीधु-कसीस-नील-तिल-ताम्रमुलेठीवचा-हल्दी-दारुहल्दी के चूर्ण का दूध-शहद-घी मिश्रित लेप, किंशुक-कपास-लौध्र-केसर-कस्तूरी- इलायची-खस-मोथा-जौ-हल्दी-तगर, कसीस-नील-तिल-ताम्र-मुलेठी-वसा- पलाश-कपूर-कुणप-दारुहल्दी का जल, कौल-तपोधन (जटामांसी), एरण्डसिरा-इमली-धव-खरीद-कपाली-कुष्ट-सुगन्धित पुष्पों का उबला जल, ओले का जल आदि, मंजिष्ठा, हिङ्गल का दूध व गाय-बकरी-भेड़ का दूध, कुलथी का क्वाथ, चिञ्चनी-बैर-अर्जुन का क्वाथ, इक्षु-नीम्बु-विदारिकन्द का रस, अंकोल तेल, कंदरु की धूप, शहद, गुड़ आदि के अतिरिक्त, लोहतार, घट, पोला पात्र आदि प्रमुख हैं।

चित्रीकरण विधि/प्रक्रिया–

पं. चक्रपाणि मिश्र ने किस-किस वृक्ष के लिये क्या-क्या सामग्री अपेक्षित है के साथ-साथ किस प्रक्रिया से चित्रीकरण करना है और उसके करने

से किस फल की प्राप्ति होगी? अथवा क्या आश्चर्य होगा का भी विस्तृत निरूपण किया है? यथा–

१. बीज का शीघ्र पौधा/वृक्ष बनना/फल प्राप्ति की विधि–

अंकोल के तेल से और नर रक्त में भीगा बीज मिट्टी से पूरी तरह भरे हुए हाथ पानी से सींचने पर तत्काल उग आता है। यह प्रयोग संसार में आश्चर्य उत्पन्न करता है।[१] यदि अंकोल के तेल के साथ शूकर और मगर की वसा से लिप्त बीज को भूमि पर बोएँ और ओले के जल से सींचे तो भी वृक्ष शीघ्र लग जाता है।[२] इसके अतिरिक्त वराह और मछली की वसा, मांस और वनक के क्षार की भावना देकर भूमि में बीज वपन करने से बीज शीघ्र पौधा बनता है और फल देता है।

कौलमीनवसामांसवनकक्षारभावितम्।
बीजमाक्षितावुप्तमारोहति फलत्यपि॥[३]

चिञ्चनी, बैर, अर्जुन के फलों के क्वाथ सेवित तथा नीम्बू के रस और घी से लिप्त कोई भी वृक्ष शीघ्र फल देता है।[४]

२. दीर्घकाल तक फल प्राप्ति के उपाय–

टूटी शाखा को खुरचकर शहद, विडङ्ग और दूध का लेप कर घास और चर्म से गाढ़ बांध दे। तदनन्तर दूध मिश्रित जल के सिंचन से वृक्ष की शाखा चिरकाल तक पके हुए फल देती है।[५] इसके अतिरिक्त किसी की फलदार शाखा को खुरचकर पका हुआ फल आद्र चमड़े से बाँध दें, तो भी वृक्ष चिरकाल तक फल देता है–

द्रुमस्य फलिता शाखा विलिख्यार्द्रेण चर्मणा।
बद्धक (बद्ध्वा) पक्वफलधत्ते चिरं चतुर चित्रकृत्॥[६]

३. आम के बीज (गुठली) को खरगोश और कूर्म के रक्त में इक्कीस बार भावित करके, फिर बोएँ और पेड़ बनने पर उसे दूध-पानी से सींचे तो फल सभी ऋतुओं में प्राप्त होते हैं।

आम्रस्य बीजं शशकूर्मरक्ते त्रिसप्तवारं परिभावितं यत्।
दुग्धाम्बुसिक्त तरुतरं प्रपन्नं फलं विधत्ते सर्वकाले॥[७]

चमेली की जड़ में कोमल भस्म बिखेर कर, फिर मिट्टी गोबर भर दे और उसके बाद जल से सींचने से बसन्त ऋतु में भी फल उत्पन्न होते हैं।[८]

वराही, घृतकृञ्चिका, कृमिहरा (हल्दी) और राई को पन्द्रह-सोलह दिन साथ रखकर गन्ने के रस से पेड़ को सींचे तथा उस मिट्टी डाल दें और धूप दें, फिर गन्ने के रस से सीचे तो वृक्ष बिना मौसम के भी फल देता है।[९]

४. कठोरता और गुठली/अस्थिरहित फलप्राप्ति विधि–

कुष्माण्ड (काशीफल/कौरा), वार्ताक (बैंगन) और पटोल (परवल) आदि के बीजों के सूअर की वसा में परिभावित (भावना देकर) बोने और अच्छी तरह सिंचाई करने से फल बड़े, प्रभूत मात्रा में और अस्थिरहित पैदा होते हैं।[१०] इसके अतिरिक्त महुए के फूल, मुलेठी, कुष्ठ, शक्कर, घी, शहद को पीसकर पेड़ की जड़ को आच्छादित कर देने[११] तथा गुञ्जा या चिरमी, शहद, गुलर, शक्कर, घी और महुए के फूल पेड़ के तने पर बिखेरने या वृक्ष के अन्दर रखने से भी फल अस्थि रहित होते हैं।[१२]

५. विशिष्ट (असाधारण) आकार के फलप्राप्ति के उपाय–

मंदार के छेद निकली हुई कुष्माण्ड की बेल की जड़ में गोबर और मिट्टी भर देने से वह बड़े-बड़े फल देती है।[१३] बैंगन के बीज को शहद और घी में भिगोकर, सूर्य की धूप में सुखा तथा बेल पर लगे हुए कोमल कुष्माण्ड को सुषिर (पोलाकर) उसमें उस बीज को डाल दें, तत्पश्चात् उसे गोबर से बंदकर फल का पकने दे और फल के पकने पर उस बीज को निकाल कर बोएँ, तो समय पर काशीफल (कद्दू) जैसे फल पैदा होते हैं।[१४] इसके अतिरिक्त करीष और कौल नाम फल की गुठली से विदग्ध गड्ढे में बालू मिट्टी अच्छी तरह भरकर, उस गड्ढे में बोया गया मूला अच्छी तरह सींचने पर स्थूली अर्थात् यूप के आकार जैसा बड़ा उत्पन्न होता है और संसार में आश्चर्य उत्पन्न करता है।

करीषकौलास्थिविदग्धगर्ते पूर्णं भृतं बालुकया न तत्र।
उप्तं सुसिक्तं खलु मूलकं स्यात् स्थूणां समं चित्रकरं च लोके॥[१५]

६. स्वादिष्ट/अत्यन्त मधुर/सुगन्धित/सुन्दरफलप्राप्तिविधि–

केले के पेड़ की जड़ को अंकोल, वराह के रक्त, मेदा और फल वसा के ऊबले पानी से सींचने पर केले के वृक्ष पर आम्रफल सदृश मीठे फल लगते हैं।[१६] विडङ्ग मुलेठी, मूंग, जौ का चून और गुड़ का लेप वृक्ष को खंरोचकर उसके ऊपर करें तथा उसमें दूध और पानी का सिञ्चन करें, तो वृक्ष पर स्वाभाविक मधुर फल लगते हैं।[१७] इतना ही नहीं विडङ्ग, मुलेठी, शक्कर, जल और दूध से सिंचित

स्वाभाविक खट्टे फल वाला पौधा भी स्थूल और मीठे फल उत्पन्न करने लगता है–

विडङ्ग-यष्ठि मधु शर्कराम्बु क्षीरे निषक्ताऽम्लफलं स्वभावात्।
धत्ते स्वकन्दे विटपोऽपि शश्वत् स्थूलानि मिष्टानि फलानि चित्रम्॥[१८]

जौ के चूर्ण को गन्ने के रस में विलोडित कर उस जल के सिञ्चन तथा शक्कर, घी फलों के पकने के समय भली प्रकार दी जाए, तो द्राक्षा (अंगूर लता मीठे फलों के होने के साथ-साथ स्वाभाविक रूप से खट्टे फल वाले वृक्ष और लताएँ मीठे फल वाली हो जाती हैं।[१९] ईख के तने में केशर और कस्तूरी के सुगन्धित जल से अच्छी प्रकार सिञ्चन करने से वह केसर-कस्तूरवत् सुगन्धित और स्वाद में अधिक मीठा हो जाता है यदि इक्षु को इलायची, खस और मोथा के जल से बीस दिन तक सींचा जाए तो उसका रस उपर्युक्त वस्तुओं की सुगन्ध से युक्त हो जाता है अर्थात् गन्ने के रस में इनकी सुगन्ध और स्वाद का भी आभास होता है या यों कहें कि एक नवीन रस की अनुभूति होती है।[२०] वृक्षों में विचित्रता उत्पन्न करने की युक्तियों में एक युक्ति यह भी है कि वृक्ष की आलवाल (क्यारी) में खल मिला, उसे शकृत (मल) विडङ्ग और गन्ने के रस से सींचे, तो उस पर हमेशा सुन्दर लगने वाले पुष्प और फल लगते हैं।[२१]

७. पुष्प समृद्धि-उपाय–

यदि किसी वृक्ष लता पर पुष्प नहीं आते हैं, तो उसकी जड़ में कोमल भस्म बिखेरकर दूध और पानी से सींचने पर पुष्पों में वृद्धि होती है।

लताविटपयोर्मूले मृदुभस्म निधाय च।
सिक्ते दुग्धाम्बुभिः पुष्पं ऋद्धिस्तत्र सदा भवेत्॥[२२]

८. विचित्रपुष्पोत्पादनविधि–

इसके अन्तर्गत पं. चक्रपाणि मिश्र ने क्रमशः गन्धहीन पुष्प को सुगन्धित बनाने की, विचित्र गंध वाले पुष्पों को उत्पन्न करने की, कौतुक उत्पन्न करने वाले पुष्प उत्पन्न करने की, विभिन्न वर्ण (रंग) के पुष्प उत्पन्न करने की विधियों का प्रायोगिक वर्णन किया है। यथा धव, खरीद, कपाली, कुष्ट और सुगन्धित पुष्पों को उबालकर उसके सिञ्चन और लेप से तथा फूलों की सुगन्ध से युक्त मिट्टी जड़ में डालने से गंधहीन पुष्प उत्पन्न करने वाला वृक्ष भी सुगन्धित पुष्प उत्पन्न करने लगता है।[२३] यदि इलायची के डोडे की छाल और तगर का जल तथा जटामांसी, कपूर, खश के क्वाथ से यूथिकाकन्द और जपा

आदि वृक्षों को सींचा जाए, तो उनके फूल सुगन्धित हो जाते हैं–

एलानखत्वक्तगराम्बु कुष्टमांसिघनोशीर कषायसिक्ताः।
सुगंधपुष्पाश्च भवन्ति सर्वाः सयूथिकाः कन्दजपादिकाश्च।।[२४]

इनका यह भी कहना है कि–यदि बोए हुए अश्वारि के तने से युक्त आलवाल में शीतल जल का गहरा सींचन करें तो विचित्र गंध वाले पुष्प उत्पन्न होते हैं।[२५] यदि कोई विदारिकन्द और इक्षु इससे लेप किए हुए वृक्ष की जड़ में गन्ने के रस की सिंचाई करे, तो आलवाल में सदैव कौतुक उत्पन्न करने वाले पुष्प उत्पन्न होते हैं।

विदारिकन्देक्षुरसेन लिप्ते मूले द्रुमश्चेक्षुरसेन सिक्तः।
कृतालवालः कुसुमानि भूरि सदा विधत्ते कुतुकं च लोके।।[२६]

पीत वर्ण/स्वर्णाभपुष्प करने की विधि–

मिश्रजी के अनुसार यदि कोई कंदरु की धूप में पलाश वृक्ष को धूपित करे, तो वह पलाश वृक्ष से चम्पा के समान पीले पुष्प प्राप्त कर सकता है।[२७] हल्दी, किंशुक, कपास और लौध्र के जल से सींचन से वृक्ष की छाल एवं पुष्पस्वर्णिम आभा वाले होते हैं।[२८] इसके अतिरिक्त मजिष्ठा और हिडगु के दूध को कपोत के रक्त में मर्दित कर उबाले हुए जल से सींचने से सौराष्ट्र के पुष्प विस्मयकारी स्वर्णाभ हो जाते हैं।

९. कपास की रुई को विभिन्न वर्णों में परिवर्तित करने की विधि– (क)

(क) नील वर्ण विधि– कपास पर जीवन्तिका के पत्ते, मनःशिला मजीठा, देवदारु, हल्दी, जौ और तिल को गाय-बकरी और भेड़ के दूध में पीसकर, लेप करने से कपास की रुई आकाश के समान नीले रंग की होती है।[२९]

(ख) रक्तवर्णविधि– जौ, हल्दी, पलाश और तिल को मिलाकर इनके जल से कपास के पौधे की जड़ में सिंचाई करने से कपास के फल की रुई लाल रंग की हो जाती है।[३०]

(ग) हरीतवर्णविधि– त्रिफला और सेमल की छाल के साथ हल्दी, कुष्ठ और सीधु के लेप तथा सिंचाई से कपास के फल की रुई हरी हो जाती है।[३१]

(घ) पीतवर्णविधि– कासीस, नील, तिल, ताम्र, मुलेठी, क्वाथ, हल्दी व दारू हल्दी के चूर्ण के लेप तथा इन्हीं के जल से सिंचाई करने पर कपास की रुई पीली हो जाती है।[३२]

१०. विचित्र लता-उत्पत्ति विधि–

एरण्डी के बीज को शूकररक्त और वसा में भिगोकर अंकोल के तेल में दिनभर परिभावित करके फिर उसे बोया जाए, तो वह बीज विचित्राकार लता को उत्पन्न करता है।[३३]

११. वल्लरी को वृक्ष सम करने की विधि–

चक्रपाणि के अनुसार तिलों को पीसकर उसमें जौ आटा मिला उसे जड़ में डालने से वृक्षों के साथ वल्लरियाँ भी जल और दूध से सींचने से वृक्षसम हो जाती हैं।

चूर्णं यवानां तिलपिष्टमिश्रं क्षिप्त्वाथादिभ....भूतोऽपि मूले।
ऊर्ध्वं प्रवृद्धा विटपैश्च तुल्या भवन्ति वल्यो जलदुग्धसिक्ताः।।[३४]

१२. विचित्र वृक्षोत्पत्तिविधि–

कुमुद के पके हुए फल और सूखे बीज को करीष (गोबर) तथा भैंस के मूत्र में मृदुकर, सूर्य की धूप में, सूखी भूमि में बोने से, उत्पन्न होने वाला करवीर लोक में आश्चर्यकारक होता है।[३५] इसी प्रकार पके हुए महुए और आम के बीज या आम के पेड़ पर उत्पन्न महुए के बीज को सात दिन तक पके हुए पलाम्बु' में रखे। तत्पश्चात सूर्य की धूप में सुखाएँ, सूख जाने पर दूध और घी के मिश्रण या बकरी के दूध में रखें। इसके बाद बीज को अंकोल के तेल में भिगोएँ और फिर बीज का वपन करें तो लोक को चकित करने वाले वृहती का वृक्ष उत्पन्न होता है।[३६]

१३. घट में पुष्पोत्पत्ति विधि–

मिश्र जी ने घट में पुष्पोत्पत्ति विधि का निरूपण करते हुए लिखा है कि– अंकोल के तेल में कौमुदीकन्द को परिभाषित कर पुनः उसमें गोबर की भावना दें, तत्पश्चात् कीचड़ और ओले के जल से भरे घड़े में उसको रख दें तो वह बीज उस घड़े में ही पुष्प देने लगता है। वराहमिहिर ने यह विधि लसोड़े और श्लेषामांकत के लिए विशेष रूप से निर्दिष्ट की है।[३७]

उपर्युक्त विवेचन के आलोक में निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि 'विश्ववल्लभः' में निरूपित वृक्षविचित्रीकरण-विधियाँ तत्कालीन समय में जितनी उपयोगी और महत्वपूर्ण थी उससे कहीं अधिक आज हैं। आज जब विश्व के सम्मुख रसायनिक खादों के प्रयोग से अधिक उत्पादन प्राप्त करने के प्रयासों में, जमीन की उर्वरकता कम होती जा रही है। उन्नत किस्मों के फल आकार में बड़े किन्तु स्वादरहित होते जा रहे हैं और सबसे बड़ी बात जनस्वास्थ्य की हानि जैसी समस्याएँ कृषि वैज्ञानिकों के सम्मुख एक चुनौती बन उपस्थित हो रही हैं। ऐसे में 'विश्ववल्लभः' लगभग साढ़े चार सौ वर्ष पूर्व भारत की उन्नत कृषि विज्ञान सम्बन्धी जानकारी के साथ अल्प व्यय, स्वास्थ्यरक्षक उपायों द्वारा अधिक उत्पादन एवं उन्नत किस्म के फल-फूल प्राप्त करने का सैद्धान्तिक और प्रायोगिक मार्ग प्रशस्त करता है। इसमें विहित अनेक उपायों का आज भी ग्रामीण कृषक प्रयोग करते हैं। इसमें वर्णित विधियाँ दूर की कौड़ी जैसी नहीं है, अपितु लोक जीवन से जुड़ी हुई हैं।

संदर्भ :

१. विश्ववल्लभः ९/१०
२. अंकोंलतैलेनवराहनक्रवसानुलिप्तं खलु बीजमात्रम्।
उप्त्वा च भूमौ करकाम्बुसिक्तं सद्यः पुरोह कुरुतेऽपि चित्रम्।। वही, ९/८
३. वही, ९/४
४. चिञ्चनी बदरपार्थफलानां क्वाथ सेवितरुः।
फलपाकं निम्बुकांबुधृत लिप्तः फलो वै याति।
नैव चिरमत्र विचित्राम्। वही, ९/२४
५. विलिख्य मध्वाज्यविडङ्गदुग्धैः लिप्तानुगाढं तृणचर्मबद्धा।
दुग्धाम्बुसेकाद्विटपस्य शाखा धत्ते चिरं पक्वफलं विचित्रम्।। वही, ९/२१
६. वही, ९/२२
७. वही, ९/९
८. निधाय मूले मृदुभस्म पर्वं मृद्गोमयाभ्यां परिपूर्णा पश्चात्।
जातिः विधत्ते कुणापाम्बुसिक्ता बसन्ते काले कुसुमान्यपीह।। वही, ९/३८
९. वही, ९/१८
१०. कुष्माण्ड वार्ताकपटोलकादि बीजं वराहस्य वसा विभाव्य।
उप्तं सुसिक्तं च फलानि भूरि बृहत्यनस्थीनि दधाति चित्रम्।। वही, ९/६
११. वही, ९/४०
१२. वही, ९/४१
१३. वही, ९/३७
वही, ९/७
१४. वही, ९/१२

१५. वही, ९/१५
१६. वही, ९/१६
१७. वही, ९/१७
१८. वही, ९/४६-४७
१९. वही, ९/४८-४९
२०. वही, ९/१३
२१. वही, ९/३४
२२. वही, ९/३२
२३. वही, ९/३३; ९/३५, ३६
२४. वही, ९/२७
२५. वही, ९/२८
२६. वही, ९/२९
२७. वही, ९/३०
२८. वही, ९/४२
२९. वही, ९/४३
३०. वही, ९/४४
३१. वही, ९/४५
३२. वही, ९/३
३३. वही, ९/३९
३४. वही, ९/१
३५. वही, ९/२
३६. वही, ९/११